मूल्य : 20 रुपये
ISSN 0973-1490
वर्ष-15 अंक-2
अक्टूबर-दिसम्बर 2017

चिन्तन-सृजन

www.asthabharati.org

त्रैमासिक

आस्था भारती, दिल्ली

भारतीय मानस का वि-औपनिवेशीकरण प्रामाणिक संस्कृतात्मा के प्रत्यभिज्ञान की कार्य-योजना

अम्बिकादत्त शर्मा*

भारतीय मानस का वह भाग जो औपनिवेशिक भारतीयता का उत्पाद है, उसके लिए वि-औपनिवेशीकरण एक प्रतिगामी विचार है और भारतीय मानस का वह भाग, जिसमें अपने स्वरूप और साथ-ही-साथ स्वरूप से विस्थापित होने की आत्मचेतना किसी-न-किसी रूप में बनी हुई है, उसके लिए वि-औपनिवेशीकरण एक पुरोगामी प्रक्रिया है। यह पुरोगामी प्रक्रिया उनके लिए मानो नीत्शे की 'शाश्वत वापसी' का आह्वान है, ताकि अपने सांस्कृतिक आत्म में पुनः प्रतिष्ठ हुआ जा सके। वही सांस्कृतिक आत्म, जिसका स्वरूप उपनिवेशवाद के कारण उत्पन्न हुए उन्मूलन और तमाम कर्दम-कलुषों के बीच भी पूरे तौर से कायान्तरित नहीं हुई है। अतः वि-औपनिवेशीकरण के प्रश्न पर दो विपरीत ध्रुवों में दोलायमान भारतीय मानस के साथ संवाद करने के लिए औपनिवेशीकरण के अभिप्राय और अपहितियों को गहरे में उद्घाटित करना होगा। इसके लिए सर्वप्रथम औपनिवेशीकरण और यूरोपीयकरण के अर्थ और निष्पत्तियों को अलग-अलग करके समझना जरूरी है। इन दोनों के बीच का अन्तर अन्य देशों के लिए भले महत्त्वपूर्ण न हो, लेकिन भारत के लिए इनका अन्तर विशेष महत्त्व रखता है। औपनिवेशीकरण एक राजनीतिक प्रक्रिया है और उसका लक्ष्य साम्राज्य-विस्तार के लिए परोक्ष-अपरोक्ष तरीकों से राजनीतिक आधिपत्य स्थापित कर अपने लाभ के लिए राजनीतिक-आर्थिकी का एक मजबूत तन्त्र विकसित करना होता है। परन्तु यूरोपीयकरण अपने-आप में अधिक व्यापक एक सांस्कृतिक-साभ्यतिक प्रक्रिया है। आधुनिकता के मुखौटे में इसने आज एक बलीयसी विश्व-सभ्यता का रूप अख्तियार कर लिया है। यह पश्चिम का एक सार्वभौम मिशन है और उसका लक्ष्य पूरी दुनिया को अपने चपेट में लेकर सम्पूर्ण

*दर्शन विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003